www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग चेतना साहित्य-१३७

वृक्ष हमारे आध्यात्मिक प्रशिक्षक

युग ऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

यह पुस्तिका स्वयं पढ़ें, परिवार में सबको पढ़ाएँ।
एक सप्ताह बाद किसी अन्य पात्र व्यक्ति को दे दें।

सौजन्य से :

8258

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मीय अनुरोध

परमपूज्य गुरुदेव की आकांक्षानुसार उनके उत्कृष्ट चिंतन को जन-जन तक पहुँचाने के लिए विभिन्न विषयों पर अति अल्प मूल्य वाली पुस्तकों का **युग चेतना साहित्य** प्रकाशित किया जा रहा है । न्यूनतम १०० पुस्तिका मँगाने के लिए डाकखर्च सहित कुल २२५) रुपया भेजना चाहिए । शक्तिपीठें एक साथ अधिक साहित्य मँगाकर स्थानीय कार्यकर्ताओं को उपलब्ध करा सकती हैं । उदार दानी भामाशाहों को अपने धन का सदुपयोग ज्ञानयज्ञ में करके पुस्तिकाएँ समाज में वितरित करनी चाहिए । इसी प्रकार के क्रांतिकारी चिंतन की पाठ्यसामग्री के स्वाध्याय हेतु 'युग निर्माण योजना' मासिक पत्रिका (वार्षिक शुल्क ३०) रुपया) के सदस्य बनें ।

-लीलापत शर्मा
व्यवस्थापक
युग निर्माण योजना, मथुरा

मूल्य : ३० पैसे

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वृक्ष हमारे आध्यात्मिक प्रशिक्षक

वृक्षों की आध्यात्मिक प्रेरणा का लाभ प्राप्त करने के लिए प्राचीनकाल में गुरुकुल, गुरु आश्रम, मंदिर, जलाशय आदि वृक्ष कुंजों से आच्छादित हुआ करते थे । उनकी शीतल छाया में विद्यार्थी पढ़ा करते थे । प्रकृति की सघन शोभा उनके मस्तिष्क में सदाचार, संयम, सेवा, सुरुचि, शुचिता और सुव्यवस्था के भाव भरा करती थी ।

पुराने जमाने में विद्यालय वहीं चलाए जाते थे जो स्थान चारों ओर से वृक्षों से आच्छादित होते थे । वृक्षावली बढ़ाने के

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रयत्न भी सदैव चलते रहते थे । गुरुकुलों में वृक्षारोपण उत्सव मनाए जाते थे और बड़े–बड़े वृक्ष पीपल, बरगद, नीम, आम, इमली आदि के लगाए जाते थे, उन्हें सब तरह से नष्ट होने से बचाया जाता था । वृक्षों को इतना महत्त्व देने का यही कारण था कि उनके बीच रहने से आध्यात्मिक भावनाएँ जाग्रत होती थीं । लोगों के मन सुसंस्कारित बने रहते थे । इनसे आंतरिक सौंदर्य जाग्रत होता था । आत्म–प्रेरणा मिलती थी । बच्चों के विकासोन्मुख मस्तिष्क पर इनसे प्राप्त प्रेरणाओं की नींव गहरी हो जाती थी,

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फलस्वरूप कठिन परीक्षा की घड़ियों में भी वह सदाचार से विचलित न होते थे ।

वृक्षों द्वारा सूक्ष्म आध्यात्मिक प्रशिक्षण निरंतर मिलता रहे, इसके लिए केवल विद्यालयों में ही उनकी बहुतायत न होती थी, हर आश्रम, गाँव, मंदिरों तथा सार्वजनिक स्थानों को भी वृक्षों से आच्छादित रखा जाता था । भारतवर्ष के इतिहास की अनेक विलक्षणताओं में यह भी एक विलक्षण, तथ्यपूर्ण और वैज्ञानिक बात रही है । जो वृक्ष दुनियाँ में कहीं नहीं पाए जाते वे भारतवर्ष में मौजूद हैं । नीम तथा पीपल केवल भारतवर्ष में

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही पाए जाते हैं । भारतीय संस्कृति के बारे में अपना मत प्रकट करते हुए न्यूयार्क के प्रसिद्ध विद्वान मि. डेलमार ने लिखा है–''पश्चिमी संसार जिन बातों पर अभिमान करता है, वे असल में भारतवर्ष से ही वहाँ गई हैं और तरह–तरह के फल–फूल, पेड़ और पौधे जो इस समय यूरोप में पैदा होते हैं, हिंदुस्तान से ही ले जाकर वहाँ लगाए गए हैं ।'' भगवान बुद्ध द्वारा लंका में लगाया गया वट वृक्ष आज भी कीर्ति स्तंभ बना हुआ है । संसार के अनेक देशों को यहाँ से वृक्ष, फल और फूल के पौधे भेजे गए, इसका मुख्य उद्देश्य

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सारे संसार में आध्यात्मिकता के मूल को ही विकसित करना रहा है ।

पारिवारिक सौहार्द्र के लिए वृक्षों का बहुत महत्व माना जाता है । घर के आँगन में प्रायः एक नीम का वृक्ष लगाना अनिवार्य माना जाता था । परिवार के सदस्यों में वह वृक्ष भी गिना जाता था । भारतवासियों के हृदय की विशालता, वृक्षों के साथ भी मानवीय व्यवहार, उन्हें अपना साथी, अपना मित्र समझकर उनकी स्मृति अपने अंतःकरण में संजोए रखना, हमारी संस्कृति की उत्कृष्टता के प्रमाण हैं । मायके के आँगन

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में लगे नीम के वृक्ष की स्मृति कोई युवती अपने सुसराल चले जाने के बाद भी बनाए रखती थी । मायके से आने वाले परिजन से अन्य परिजनों की कुशलता के साथ–साथ नीम की कुशलता भी पूछना न भूलती थी । मायके आने पर अपने द्वारा लगाए एवं सींचे गए उस नीम के वृक्ष से मिलकर उसका हृदय आत्मीयता से भर आता था और अतीत की मधुर स्मृतियाँ पुनः उभर आती थीं । बचपन में वह इस वृक्ष की डाली पर झूला डालकर अपनी सहेलियों के साथ झूलती और सावन के मधुर गीत गाती थी । वह नीम

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का वृक्ष स्नेह, सौजन्य, आत्मीयता के आध्यात्मिक गुणों की वृद्धि में बहुत सहायक होता था । इसी की शीतल छाया में बैठकर दुपहरी में घरेलू कार्य किए जाते थे । प्रातःकाल जिस वृक्ष की डालियों पर बैठी चिड़ियों की चहचहाहट सुनकर नींद खुलती थी, उस नीम को कैसे भुलाया जा सकता है । कन्व ऋषि के आश्रम में रहकर शकुंतला वृक्षों और लताओं से मानवीयता का व्यवहार करती थी, उससे उसके अंतःकरण में आध्यात्मिकता का ऐसा विकास हुआ कि तपस्वी जीवन व्यतीत कर भरत जैसे प्रतापी पुत्र को जन्म देने

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में सफल हुई जो शेर के बच्चों के साथ खेलता, उनके दाँत गिनता था, उसी के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा ।

एक अध्यापक वृक्ष की छाया में बच्चों को पढ़ा रहे थे । एक बच्चे के अभिभावक (बच्चे के दादा) उससे मिलने आए । अपने बच्चे को वृक्ष के नीचे पढ़ते देखकर उनका दिल भर आया । पूछने पर बताया कि यह वृक्ष उन्होंने आज से तीस वर्ष पहले लगाया था, जब वे इसी विद्यालय के छात्र थे । आज अपने लगाए उस वृक्ष को इतना बड़ा हुआ देखकर और उसकी शीतल छाया में

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने नाती को पढ़ते देखकर दिल भर आया । यह मानव के हृदय में आत्मीयता की पराकाष्ठा थी जो भारतीय संस्कृति का मूल है । विघटित होती जा रही यह आत्मीयता पुनः जन–जन के हृदय में समाहित होती चले, तो धरती को स्वर्ग बनने में देर न लगे ।

कुछ जीव किन्हीं खास दुष्ट आदतों में बुरी तरह प्रवृत्त हो जाते हैं । वे किन्हीं इंद्रियों का बार–बार दुरुपयोग करते हैं । हर बार उन्हें नरक भोगना पड़ता है, पर वे आदत से इतने मजबूर होते हैं कि दंड भोग कर उसे भुला देते हैं और फिर

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसी आदत का अनुसरण करने लगते हैं । ऐसे जीवों की वे इंद्रियाँ कुछ जन्मों के लिए छीन ली जाती हैं । जैसे बंदूक का दुरुपयोग करने वालों से सरकार लाइसेंस जब्त कर लेती है । इसी प्रकार अदृश्य सत्ता यह आवश्यक समझती है कि अमुक इंद्रियों को जब्त कर लिया जाए ताकि बुरी आदत अगले जन्म में छूट जाए । जो जीवन भर इंद्रियों का दुरुपयोग करते हैं, उन्हें जड़ योनि में जाना पड़ता है । वृक्षादि में जन्म लेना भोग योनि है । उनमें जीव तो रहता है, पर क्रियाशील चेतना का अधिकांश भाग जब्त कर लिया जाता है ।

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन भोग योनियों में जन्म प्राप्त होना प्रभु की कृपा का ही चिह्न है क्योंकि बिना जड़ योनि मिले उन दुष्ट संस्कारों को भुला सकना उस अज्ञानी के लिए कठिन था । वृक्षादि की योनि में जीव को तब तक रहना पड़ता है जब तक वह पुरानी आदतों को भूल नहीं जाता है । अब उसकी उन्नति का क्रम यहीं से शुरू होता है । परमात्मा वृक्ष योनि में जन्म देकर जीव पर बड़ी दया करता है । उसे पुनः यह अवसर प्रदान करता है कि वह अपनी दुष्प्रवृत्तियों को छोड़कर परोपकार कर सके और विवशता वश ही सही परोपकार

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करके पुण्य अर्जित कर सके और भविष्य में उच्च श्रेणी की योनियों में जन्म लेना संभव हो सके ।

वृक्ष योनि में मनुष्य को प्राण वायु, ईंधन, फल, फूल, औषधि आदि प्रदान कर समाज की महती सेवा करता है । इस प्रकार प्राप्त पुण्य से ही उसे अगले जन्म श्रेष्ठ योनियों में मिलते हैं ।

आशा है आपको यह पुस्तिका अच्छी लगी होगी । इस पुस्तिका को एक सप्ताह से अधिक अपने पास रखना ज्ञानयज्ञ में विघ्न डालना है । आप भी कुछ पुस्तकें समाज में वितरित करें ।

मुद्रक : युग निर्माण प्रेस, मथुरा

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ज्ञानयज्ञ की क्रांतिकारी योजनाएँ

(१) **श्रीराम झोला पुस्तकालय**–समयदान के अंतर्गत परिजन नित्यप्रति न्यूनतम एक घर में साहित्य बदलने का कार्य करें । पूज्यवर के चिंतन को घर–घर पहुँचाएँ ।

(२) **माता भगवती स्वचालित पुस्तकालय**–नियमित दैनिक अंशदान (न्यूनतम ५० पैसा प्रतिदिन) ज्ञानयज्ञ के लिए निकालकर १५) रुपए की युग चेतना साहित्य की ५० पॉकेट बुक्स प्रतिमाह पढ़ने के लिए बाँटें ।

(३) **गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना**–पुरानी पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना की स्लिप लगाकर समाज में वितरित कर दें । स्लिप गायत्री तपोभूमि, मथुरा से मँगा सकते हैं ।

(४) **युग चेतना साहित्य वितरण योजना**–३० पैसा मूल्य वाली १६ पेजी पॉकेट बुक्स न्यूनतम ९०० मँगाने के लिए डाकखर्च सहित कुल २२५) रुपया भेजकर मँगाएँ और वितरित करें ।

संपर्क सूत्र–**विचार क्रांति अभियान**
युग निर्माण योजना, मथुरा–२८१००३

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग ऋषि चिंतन

विचारों की विचारों से काट, आस्थाओं का परिष्कार और उल्टे को उलट कर सीधा करना ही विचार क्रांति का लक्ष्य है । सद्ज्ञान का आलोक नासमझी के अंधकार को मिटाने का कार्य संपादित करे । हमारे विचार बड़े पैने हैं, तीखे हैं । दुनिया को पलटने का जो दावा हम करते हैं, वह सिद्धियों से नहीं, अपने सशक्त विचारों से करते हैं । आप इन विचारों को फैलाने में हमारी सहायता कीजिए ।

-पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अधिक जानकारी के लिए पढ़ें : वृक्षारोपण एक परम पुनीत पुण्य-२), तुलसी के चमत्कारी गुण-३), स्वास्थ्य रक्षा प्रकृति के अनुसरण से ही संभव-६), युग ऋषि का अध्यात्म-युग ऋषि की वाणी में-७)५०, विकृत चिंतन रोग-शोक का मूलभूत कारण-६) ।

पुस्तक सूची के लिए निम्न पते पर लिखें ।

युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३
फोन : (०५६५) ४०४०००, ४०४०१५

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org